

परिचर्या प्रणाली

अर्थात्

रोगी मनुष्य की घर में
शुश्रूषा करने के लिये
सरल उपदेश

—•••—

पण्डित महेन्दुलाल गर्ग
द्वारा संगृहीत

द्वारा

श्रीमान् राजा साहब भिनगा की सहायता
काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित ।

—
1908

Printed by Madho Prasad Bharat Press Ben.

निवेदन ।

सभ्य देशों में स्त्रियों को "परिचर्या प्रणाली" सिखाने के बहुत अच्छे प्रबन्ध हैं। वे डाक्टरों के अधीन अस्पताल में इस काम को सीखती हैं, और दीक्षित हो कर अपनी जीविका प्राप्त करती हैं। हमारे देश वासी परिचर्या के काम को इतना मुख्य नहीं समझते। रोगी को दवा पिला देना सब किसी के लिये साधारण बात माना जाता है। यथार्थ में रोगी का जीवन उचित परिचर्या से ही बचता है। रोगी की ठीक संभाल न रखी जाय तो बीमारी दूर होने में बड़ा विलम्ब लग जाता है। इस छोटी सी पुस्तक में परिचर्या संबंधी मोटी मोटी बातें हम लिये लिखी गई हैं कि घर की बहू बेटियां उनकी ध्यान में रखें और समय पड़ने पर प्रेम और धैर्य के साथ उनका व्यवहार करके अपने प्रियजनों की प्राण रक्षा करें।

अस्पताल
२४ पंजाबी प्रेस
लखनऊ

महेन्दुलाल गर्ग ।

सूचापत्र ।

प्रथम अध्याय ।

रोगी का घर ।

घर की तजवीज़, विस्तर, मित्र धांधलियों से
बेह कराने के नियम, नल सूत्र का प्रयत्न ।

पृष्ठ १ से ६ तक

दूसरा अध्याय ।

परिचर्या विधि ।

परिचारक की योग्यता और उनके कर्तव्य, भूल
करना, काम से छुट्टी लेना, मोट-सुब, ज़ख्मी पदाथं,
भुस्सा और दवाइयों की सेबा, रोगी की सेवा,
संता हांभना, पानी पिलाना, खरक के कापदे,
रुनाम करना, मुंह पोना, बुझी करना, नटाना,
बैठाना, नोद लाना, विस्तर बदलना, रोग सुख
की सेवा ।

पृष्ठ ७ से २३ तक

(२)

तीसरा अध्याय ।

रोग के लक्षण ।

केकड़े और हृदय मय्यत । ग, तांभी,
सांस, दर्द, हाफूर के लिये । ी, चेट और
की बीमारियां, मूत्र परीक्षा, दिमागी रोग
बुखार (ज्वर), थर्मामीटर, नाड़ी गिनना, रक्त
का उत्सारना, छूतवाले बुखारों में सामान्यन्दीयस्व
पृष्ठ २८ से ५७ तक

चौथा अध्याय ।

शोषधि प्रकरण ।

साधारण शिक्ता, नापने की विधि, मोली चूर्ण,
गरारा करना, भपारा देना, आंख में दवाई डालना,
गालिश करना, पुलिटिस र्वाधना, राई की पुलिटिस,
नीयले की पुलिटिस, मास्टर, सूखा सेंक, तर सेंक
पंज करना, भाफ लेना । पृष्ठ ५१ से ६२ तक

(३)

पचवां अध्याय ।

पथ्य ।

दूध, जौ का पानी, चावल, दलिया, मांड़,
(अरारोट, सागूदाना, चिरखों का मांड़, जौ का
मांड़, यवागु, पेय, दाल का पानी, छाउ की कढ़ी,
सिंघाड़े का आटा, ओटमील, अलसी की चाय,
भूमी की रोटी, विछायती पथ्य-वैजसं फूड,
मेलिन फूड, एलनवरीज़ फूड, कांजी घाटर, दाल
का पानी, सागूदाने की सिचड़ी ।

पृष्ठ ६३ से ७४ तक

छठां अध्याय ।

बीर फाड़ में सफ़ाई ।

सफ़ाई का कारण, हाथों की सफ़ाई, रोग
रूपान की सफ़ाई, बीजारों की सफ़ाई, ड्रेमिंग
की सफ़ाई, ऐंटीसेप्टिक दवाइयां ।

ग्रहणों के लिये आवश्यक चीज़ें ।

पृष्ठ ७५ से ८२ तक

(३)

तीसरा अध्याय ।

रोग के लक्षण ।

जेकड़े गीर दृश्य गन्धभी रोग, तांगी, भांग, ददं, टाकूर के लिये तपारी, चेट और की योगारिषां, मूत्र परीक्षा, दिमागी रोग, युसार (ज्वर), यमांगीटर, नाही गितमा, का उत्तारना, छूतवाले युसारों में तास यन्त्रोद्घात।
पृष्ठ २८ से ५० तक

चौथा अध्याय ।

शोधधि प्रकरण ।

साधारण शिक्षा, नापने की विधि, गोली चूर्ण, गरारा करना, भपारा देना, आंख में दवाई डालना, मालिश करना, पुलिटिस बांधना, राई की पुलिटिस, कीचले की पुलिटिस, स्नास्टर, सूखा सेंक, तर सेंक रुपंज करना, भाक लेना । पृष्ठ ५१ से ६२ तक

पचत्रां अध्याय ।

पच्य ।

दूध, जौ का पानी, चावल, दलिया, मांड़,
अरारोट, सागूदाना, चिरघों का मांड़, जौ का
मांड़, यवागु, पेय, दाल का पानी, उाउ की कढ़ी,
सिंघाड़े का आटा, ओटमील, अलसी की चाय,
भूसी की रोटी, बिछायती पच्य-वेंजसें फूह,
मेलिंस फूह, एलनवरीज़ फूह, कांजी घाटर, दाल
का पानी, सागूदाने की लिचड़ी ।

पृष्ठ ६३ से ७४ तक

छठां अध्याय ।

चीर फाड़ में सफ़ाई ।

सफ़ाई का कारण, हाथों की सफ़ाई, रोग
रूपान की सफ़ाई, औज़ारों की सफ़ाई, ड्रेसिंग
की सफ़ाई, ऐंटीसेप्टिक दवाइयां ।

गृहस्थी के लिये आवश्यक चीजें ।

पृष्ठ ७५ से ८२ तक

भांगरा अण्णाय ।

रोग के कारण ।

१. संस्कृत २. हिन्दी ३. उर्दू ४. अंग्रेजी ५. फारसी ६. पंजाबी ७. बंगाली ८. मराठी ९. गुजराती १०. तमिल ११. कन्नड़ १२. मलयालम १३. सिंधी १४. संथाली १५. कोङ्कणी १६. ओड़िया १७. नेपाली १८. बुद्धी १९. संस्कृत २०. हिन्दी २१. उर्दू २२. अंग्रेजी २३. फारसी २४. पंजाबी २५. बंगाली २६. मराठी २७. गुजराती २८. तमिल २९. कन्नड़ ३०. मलयालम ३१. सिंधी ३२. संथाली ३३. कोङ्कणी ३४. ओड़िया ३५. नेपाली ३६. बुद्धी ३७. संस्कृत ३८. हिन्दी ३९. उर्दू ४०. अंग्रेजी ४१. फारसी ४२. पंजाबी ४३. बंगाली ४४. मराठी ४५. गुजराती ४६. तमिल ४७. कन्नड़ ४८. मलयालम ४९. सिंधी ५०. संथाली ५१. कोङ्कणी ५२. ओड़िया ५३. नेपाली ५४. बुद्धी ५५. संस्कृत ५६. हिन्दी ५७. उर्दू ५८. अंग्रेजी ५९. फारसी ६०. पंजाबी ६१. बंगाली ६२. मराठी ६३. गुजराती ६४. तमिल ६५. कन्नड़ ६६. मलयालम ६७. सिंधी ६८. संथाली ६९. कोङ्कणी ७०. ओड़िया ७१. नेपाली ७२. बुद्धी ७३. संस्कृत ७४. हिन्दी ७५. उर्दू ७६. अंग्रेजी ७७. फारसी ७८. पंजाबी ७९. बंगाली ८०. मराठी ८१. गुजराती ८२. तमिल ८३. कन्नड़ ८४. मलयालम ८५. सिंधी ८६. संथाली ८७. कोङ्कणी ८८. ओड़िया ८९. नेपाली ९०. बुद्धी ९१. संस्कृत ९२. हिन्दी ९३. उर्दू ९४. अंग्रेजी ९५. फारसी ९६. पंजाबी ९७. बंगाली ९८. मराठी ९९. गुजराती १००. तमिल १०१. कन्नड़ १०२. मलयालम १०३. सिंधी १०४. संथाली १०५. कोङ्कणी १०६. ओड़िया १०७. नेपाली १०८. बुद्धी १०९. संस्कृत ११०. हिन्दी १११. उर्दू ११२. अंग्रेजी ११३. फारसी ११४. पंजाबी ११५. बंगाली ११६. मराठी ११७. गुजराती ११८. तमिल ११९. कन्नड़ १२०. मलयालम १२१. सिंधी १२२. संथाली १२३. कोङ्कणी १२४. ओड़िया १२५. नेपाली १२६. बुद्धी १२७. संस्कृत १२८. हिन्दी १२९. उर्दू १३०. अंग्रेजी १३१. फारसी १३२. पंजाबी १३३. बंगाली १३४. मराठी १३५. गुजराती १३६. तमिल १३७. कन्नड़ १३८. मलयालम १३९. सिंधी १४०. संथाली १४१. कोङ्कणी १४२. ओड़िया १४३. नेपाली १४४. बुद्धी १४५. संस्कृत १४६. हिन्दी १४७. उर्दू १४८. अंग्रेजी १४९. फारसी १५०. पंजाबी १५१. बंगाली १५२. मराठी १५३. गुजराती १५४. तमिल १५५. कन्नड़ १५६. मलयालम १५७. सिंधी १५८. संथाली १५९. कोङ्कणी १६०. ओड़िया १६१. नेपाली १६२. बुद्धी १६३. संस्कृत १६४. हिन्दी १६५. उर्दू १६६. अंग्रेजी १६७. फारसी १६८. पंजाबी १६९. बंगाली १७०. मराठी १७१. गुजराती १७२. तमिल १७३. कन्नड़ १७४. मलयालम १७५. सिंधी १७६. संथाली १७७. कोङ्कणी १७८. ओड़िया १७९. नेपाली १८०. बुद्धी १८१. संस्कृत १८२. हिन्दी १८३. उर्दू १८४. अंग्रेजी १८५. फारसी १८६. पंजाबी १८७. बंगाली १८८. मराठी १८९. गुजराती १९०. तमिल १९१. कन्नड़ १९२. मलयालम १९३. सिंधी १९४. संथाली १९५. कोङ्कणी १९६. ओड़िया १९७. नेपाली १९८. बुद्धी १९९. संस्कृत २००. हिन्दी २०१. उर्दू २०२. अंग्रेजी २०३. फारसी २०४. पंजाबी २०५. बंगाली २०६. मराठी २०७. गुजराती २०८. तमिल २०९. कन्नड़ २१०. मलयालम २११. सिंधी २१२. संथाली २१३. कोङ्कणी २१४. ओड़िया २१५. नेपाली २१६. बुद्धी २१७. संस्कृत २१८. हिन्दी २१९. उर्दू २२०. अंग्रेजी २२१. फारसी २२२. पंजाबी २२३. बंगाली २२४. मराठी २२५. गुजराती २२६. तमिल २२७. कन्नड़ २२८. मलयालम २२९. सिंधी २३०. संथाली २३१. कोङ्कणी २३२. ओड़िया २३३. नेपाली २३४. बुद्धी २३५. संस्कृत २३६. हिन्दी २३७. उर्दू २३८. अंग्रेजी २३९. फारसी २४०. पंजाबी २४१. बंगाली २४२.

भाग, दूर, दायर के निचे लपारी, छेद गैर के
 की बागारिया, मुक्त परीक्षा, दिनांकी लेख
 पुनार (७७८), अनांगीतर, नाही निमना
 का पुनारना, पुनारना पुनारों में नाग अर्द्ध
 पृष्ठ २८ से ५७ तक

पृष्ठ २८ को ५३ तक

चौथा अध्याय ।
शेषः

सोपधि मकरणा ।

सापथि प्रकरण ।
साधारण धिता, नापने की विधि, गोखी बू
रा करना, मपारा देना, भांस में दयाईं डालना,
कण करना, पुलिटम बांधना, राई की पुलिटम,
की पुलिटम. मास्टर, सूता सेंक, तर सेंक
पृष्ठ ५० के तः

पुलिटि, मूरगा सेंक, तर सेंक
पुलिटि, मूरगा सेंक, तर सेंक

पचवां अध्याय ।

पच्य ।

दूध, जौ का पानी, चावल, दलिया, मांड़,
भरारोट, सागूदाना, चिरखों का मांड़, जौ का
मांड़, यथागु, पेय, दाल का पानी, छाउ की कढ़ी,
सिंघाड़े का आटा, ओटमील, अलसी की चाय,
भूसी की रोटी, विलायती पथ्य-वेजसे कूह,
मेलिंस कूह, एलनवरीज कूह, कांजी घाटर, दाल
का पानी, सागूदाने की लिचही ।

पृष्ठ ६३ से ७४ तक

छठां अध्याय ।

चीर फाड़ में सफाई ।

सफाई का कारण, हाथों की सफाई, रोग
रूपान की सफाई, औजारों की सफाई, झेसिंग
की सफाई, ऐंटीसेप्टिक दवाइयां ।

गृहस्थी के लिये आवश्यक चीजें ।

पृष्ठ ७५ से ८२ तक

पचवां अध्याय ।

पच्य ।

दूध, जी का पानी, चावल, दलिया, मांड़,
रारोट, सागूदाना, घिरवां का मांड़, जी का
मांड़, यवागु, पेय, दाल का पानी, छाछ की कढ़ी,
अंघाड़े का आटा, ओटमील, अलसी की चाय,
मी की रोटी, बिलायती पच्य-धेजसें फूह,
लिंग फूह, एलनयरीज फूह, कांजी घाटर, दाल
का पानी, सागूदाने की लिचड़ी ।

पृष्ठ ६३ से ७४ तक

षष्ठ अध्याय ।

ताड़ में सफ़ाई ।

... हाथों की सफ़ाई, रोग
औजारों की सफ़ाई, ब्रैसिंग
... दवाइयां ।

आवश्यक चीजें ।

पृष्ठ ७५ से ८२ तक

परिचर्याप्रणाली ।

पहिला अध्याय ।

गृह निर्वाचन, विस्तर, मित्र वांधवा में भट करने
के नियम, मल मूत्र का प्रबंध ।



रीय गृहस्थियों के केवल एक ही
ग घर होता है और उसीमें रोगी,
पुखी तथा शारीर्य मनुष्य रहते
हैं । परन्तु जिनको भगवान ने
नर्त्य दी है उनको चाहिए कि रोगी
। दशा में शलग पर में रहें । रोगी
ऐसा घर जिसमें प्रकाश और हवा
। सामदरपत हो अच्छा है । यदि
ऊँची और ऊपर रोगनदान हो
सुन्दर है ।

जैसे प्रकाश के बिना पं
पीले पड़ जाते हैं, रोगी मनुष्य पर
का अभाव ऐसा ही कुफल दिखाता
घर में सील न होनी चाहिए
न फालतू असवाध । गुलदस्ता और
का रहना घुरा नहीं है । बीमार को
पाई बहुत चौड़ी न हो, चौड़े पल
बीमार को सहायता देने के लिये
चढ़ना पड़ता है जिसमें रोगी और
चारक दोनों को तकलीफ होती है । च
पाई दीवार से लगी हुई न बिछाई जा
कम से कम एक फुट भर अलग रहे । पा
ताने कोई खिरकी न हो क्योंकि बीमार
की नजर उस ही ओर रहेगी । घर में बहुत
उजैला रहने से -
को अच्छा नहीं जान

कुरसी ज़रूर चाहिए और पैर रखनेके लिये एक छोटी सी तिपाई । पासही एक छोटी सी मेज हो जिसपर दवाई के बोतल तथा अन्य आवश्यक चीजें मौजूद हों । बीमार के कमरे में घृणा उत्पन्न करनेवाली कोई चीज न रहनी चाहिए । मल मूत्र तत्काल बाहर उठा दिया जाय । खाने पीने की चीजें भी अलग रहें, केवल आवश्यकता पड़ने पर लाई जाय । रोगी का बचा हुआ खाना दूसरा न खाय और न उसका जूँठा कोई पानी पीये । घर की घदबू दूर करने के लिये जिस समय खिड़की और दरवाज़े खोले जाय उस समय इस बात का ध्यान बर्यदा रहे कि रोगी को ठण्डी हवा न लग जाय । कमरे में पूरी सफाई हो तथा टायलर के आने पर जिन चीजों की आवश्यकता होती है वे सब मौजूद रहें ।

हमारे देश में चिमनी वाले घर नहीं

जैसे प्रकाश के पिना पौधों के पत्ते
 पे पड़ जाते हैं, रोगी मनुष्य पर भी प्रकाश
 सभाय ऐसा ही फुल्ल दिलाता है ।

घर में मील न होनी चाहिए लौह
 फालतू सहाय । गुलादस्ता लौह पित्रो
 रहना सुरा नहीं है । पीमार की पार-
 र्द बहुत चौड़ी न हो, चौड़े पलङ्ग पर
 मार को महायता देने के निम्ने ऊपर
 ————— ३ त्रिममें रोगी लौह परि-

होगे जाड़े के दिन में परों का गरम करने के
 लिये कोयलों की लंगीठी रखनी जाती है।
 बीमार के घर में जो लंगीठी जलाई जाए
 उसको बाहर मुलमाना चाहिए। घर में
 लंगीठी पर कोयले रख कर दहकाना मुल
 है। दहकते हुए कोयले बाहर से लाकर
 रखले जाय तो कुछ ठर नहीं है।

रोगी से मिलने के लिये जो मित्र
 यांधव आते हैं उनके लिये डाक्टर से शास्त्र
 ले रखनी चाहिए। छूतवाली बीमारी में
 किसी को न आने देना चाहिए। खाली
 पेट कोई मनुष्य रोगी के पास न जाय।
 रोगी को छूने वाला अपने हाथ अवश्य
 साबुन पानी से धो डाले। मिलने वाली
 बहुत बातें न करें, न रोजगार वेशा
 दूकानदारी या फालतू चर्चा छेड़ें, बहुत
 देर तक न बैठें। मिलनेवाला इस ढंग से
 बैठे कि रोगी को उसका चेहरा अच्छी

तरह दिखाई पड़े और देखने के लिये
 एधर उधर गिर हिलाना झुलाना न हो ।
 बीमार के ऊपर झुंझ में जाना या उसके
 ऊपर झुंझ कर घात पीत करना अच्छा
 नहीं है ।

दरवाजे या पिङ्गवियों पर बिकों का
 लगाना बहुत अच्छा है । मक्खनी मच्छर
 बाहर से लाकर रोगी को सता नहीं सकते ।

गल बुझादि के लिये गमले काम में
 लाए जाय । रोगी को उठाकर दूर पाखाने
 में ले जाना बहुत दुता है । फर्श पर गल
 गूँस त्याग कराना भी बहुत हानिकारक है ।

निर्दल रोगियों को दिम्बर पर ही
 दान पिलाना होता है । इसके लिये (३०००)
 देहरेन का व्यवहार अच्छा होता है । यह
 देहरेन गोल होता है और दृढ़ता दिम्बर
 की समान है । दिम्बर पर दारुनी का
 का देहरेन खुली है और यह देहरेन

(६)

हैं । गोल लगाने के लिये कमर उठाते हैं ।
 स्लिपर की शकल वाले के लिये रोगी के
 एक करवट से दूसरे करवट लिटा देते हैं
 और फिर पतले सिरे को नीचे कर देते हैं
 वेडपैन में दुर्गन्धिनाशक औषधि डाल
 रखनी चाहिए ।

१०-११ ६५५

जिस तरह मा बच्चे की खबरदारी रख
 है परिचारक का सब ध्यान रोगी
 ओर होना चाहिए । मिजाज ठण्डा और
 हँसमुख हो, मिहनत की आदत हो।
 बुढ़िया बखान की बातों पर विश्वास न
 करके डाक्टर या हकीम की बातों को ही
 ठीक समझना परमावश्यक है । रोगी के
 लिये बताई हुई बात से टलने वाली न हो,
 आलस्य बिल्कुल न हो, आंखों से अच्छी
 तरह दिखाई देता हो, घिन करने व
 स्वभाव न हो क्योंकि जिसके स्वभाव
 घृणा है उससे रोगी की टहल नहीं हो
 सकती । अपने मुख और शराम का ध्यान
 रखना ठीक नहीं है । जिसका झटल
 स्वभाव नहीं है वह रोगी की बातों में आ
 कर उसे मनमाना व्यवहार करने देगी जिस-
 से कारण रोग का अच्छा होना बहुत ही
 टिन हो जायगा । कभी



जिस तरह मा बच्चे की खबरदारी रखती है परिचारक का सब ध्यान रोगी की ओर होना चाहिए । मिजाज ठण्डा और हँसमुख हो, मिहनत की आदत हो । बुढ़िया बखान की बातों पर विश्वास न करके डाक्टर या हकीम की बातों को ही ठीक समझना परमावश्यक है । रोगी के लिये बतार्ई हुई बात से टलनेवाली न हो, आलस्य बिल्कुल न हो, आंखों से अच्छी तरह दिखाई देता हो, चिन करने का

अनुसार यार्जि ही न होगा तो उसे
 घेष्टा कहाँ मफल हो सकती है ।
 ऐसी दशा में मर भी सकता है । इस
 यह ज़रूरी है कि जिस दवाई या
 में डाक्टर की आज्ञा का पालन नहीं है
 यह ठीक ठीक कह देना चाहिए ।
 वाली को नींद आ रही हो तब
 हवाश ठीक न हो तो दवाई न दे ।
 मुँह धोकर चित्त सावधान करे और
 दवाई दे । उनीदे पन में बहुत भूल
 सकती है । थर्मामिटर लगाना हो
 बीमारी का हाल लिखना हो तब भी
 सावधान चाहिए ।

(२) टहल वाली खुद तन्दुरुस्त हो
 कपड़े साफ रखे । रोगी का काम करने
 उपरान्त सदा अपने हाथ धोवाले । भोजन
 करने और निग लेने समय धिक्क क

अनुसार यतार्थ ही न होगा तो उनकी चेष्टा कहां सफल हो सकती है । रोगी ऐसी दशा में मर भी सकता है । इस लिये यह ज़रूरी है कि जिस दवाई या पदार्थ देने में डाक्टर की आज्ञा का पालन नहीं हुआ वह ठीक ठीक कह देना चाहिए । टहलवाली को नींद आ रही हो तथा हो हवास ठीक न हो तो दवाई न दे । पहिले मुँह धोकर चित्त सावधान करे और दवाई दे । उनीचे पन में बहुत भूल सकती है । थर्मामीटर लगाना हो बीमारी का हाल लिखना हो तब भी सावधान चाहिए ।

(२) टहलवाली खुद तन्दुरुस्त कपड़े साफ रखे । रोगी का काम कर उपरान्त सदा अपने हाथ धोखाले । मे करने और निद्रा लेने का समय स्थिर क्योंकि एक मनुष्य रात दिन जगकर

यह दूर करने वाली दवाई, और यदि वैद्यक मत में इलाज होता होता हमामदस्ता, सिललोढ़ी, गहद आदि पदार्थ भी हैं ।

डाक्टर के लिखे नुसखे को संभाल कर रखना बड़ा जरूरी है क्योंकि जब कभी नया डाक्टर आता है तो वह पिछले नुसखों को देखना चाहता है । कभी कभी एक ही डाक्टर को अपने पुराने नुसखे देखने पड़ जाते हैं । रोग चाहे जैसा साधारण हो परन्तु इस बात को न भूले, वर्यो कि जो रोग आज बहुत साधारण जान पड़ता है वह पीछे से कठिन भी हो सकता है ।

लैसिथियां ऐसे द्रव्य हैं जिनकी चाहिएं कि रोगी उनको खुद न खासके क्योंकि जल्दी लपटा होने की लपटा के बाद रोगी बहुत ही दवाई खाते हैं लपटा निरुद्ध रुकने की लैसिथियां खाए खाते हैं

घंटे पर रोगी का बुखार नापा जाता है। यह भी इसी किताब में लिख लेना चाहिए। बीमार की दशा में यदि कोई नई बात जान पड़े तो उसे भी लिख ले। कितनी बार दस्त हुए हैं। रंग और उनका रूप जानना भी काम देता है। रोगी की सेवा के लिये जो चीजें बरती जाती हैं उन्हें ऐसे ढंग से रखते कि जब जरूरत हो तब भट मिल जाय। रोगी के घर में साधारणतः ये चीजें रहनी चाहिए—मोमबत्ती, लालटेन, पानी गरम करने वाली केतली, छुरी, फेंची, फलालेन का टुकड़ा, सेफटी पिन, सुई धागा, पिन, धुले हुए भाड़न, वरमाती, दवाई नापने का गिलास, चमचा, दियासलाई, धूरने और उलटी करने के लिये गमला, मल सूत्र त्यागने के घर्तन (येहपैन और यूरिनल), सायुन, तौलिया, रुपंग, रुई, कंबल, जग, स्प्रिट की शंगीटी, पंखा, दवात, कलम, कागज, घड़ी, थर्मामीटर,

के रोगी गर्मी से घबड़ा रहा हो तो उसके
 रंगना भलना घुटा होगा यह विचार बहुत ही
 छोटा है । गर्मी दटाने वाली पंखे की वायु
 कभी हानिकारक नहीं हो सकती । हाँ बाहर
 की हवा का भंकारा खरीर पर लगना
 जरूर रोकना चाहिए । पंखे की हवा सिर
 पर लगनी चाहिए । हवा खोर से न करे ।
 दसगै हवा करने वाला जरूर ही पक जाता
 है खार रोगी भी हवा के भंकारों से घबड़ा
 उठता है । परन्तु जब खूब खराब रहा हो
 खार पसीना भी ला रहा हो तो जरूरी जरूरी
 पंखा चलाना रोगी को बड़ा लाभ पहुंचा है
 दोड़ी देर भी पंखा बंद कर लिया जाए तो
 रोगी घबड़ा उठता है । जब रोगी का जो
 बिस्तरलाता हो तो सिर के दोनों को खोर
 पंखा करे इसके विरुद्ध नहीं । बिस्तर
 से नीचे की खिलों के कुर्छों से हवा
 चलाना अच्छा है ।

यथा कुछ के बदले कुछ दवाई खालेता है।
 सय युरी यार्ते हैं । किसी किसी रोगी के
 दवाई पीना अच्छा नहीं लगता, उसका दां
 लगता है तो वह शीशी उलट कर खाली
 कर देता है । रोगी को कभी यह अवसर न
 देना चाहिए कि वह अपने आप दवाई
 पिए । मालिश करने या लगाने की दवाई
 खाने पीने की दवा से अलग रखनी
 चाहिए । मालिश करने और घाव धेने वाली
 तथा लेप की चीजें प्रायः जहरीली होती
 हैं । इन सब को पीने वाली दवाइयों से यथा
 सम्भव दूर रखना चाहिए । इस बात में कभी
 भूल न हो । इसका सदा ध्यान चाहिए ।

रोगी को शारीरिक सुख पहुंचाने के
 लिये कई बातें करनी पड़ती हैं, जैसे पंखा
 हांकना । बहुत लोग शरीर की गर्मी दूर करने
 के लिये हवा करना और व्यास मुझाने के
 लिये पानी देना अच्छा नहीं समझते । अथ

इस समय पर्फ की डली बुसाना या मोटा-
 टर देना बहुत अच्छा है । ऐसा करने से
 पास बुझती है और उसटी सकती है ।

पानी को उबाल कर पिलाना इस
 सेबे अच्छा समझा जाता है कि पानी के
 कीड़े मर जाते हैं । ऐसे जल को ठंडा कर
 के पिलाना अच्छा है परन्तु इस जल का
 स्वाद मारा जाता है इस लिये प्यास दूर
 नहीं होती । निर्दोष शीतल जल पिलाना
 सुत नहीं है । रात के पिछले पहर रोगी
 को जल पिलाना अच्छा नहीं । उस समय
 मोटाघाटर सेमनेह देना अच्छा है । यदि
 दनका मिलना सम्भव हो तो पानी ही
 सही । बतुतेरे लोग खाली पेट पानी देना
 अच्छा नहीं समझते इसलिए मिर्ची को एक
 डली दिखा कर तब पानी पिलावे परन्तु
 मिर्च से उदाह बना जाती है ।

पानी देना-बहुधा देखा गया है कि ज्वर ।
कारण जब रोगी प्यास से छटपटाता है तो उं
थोड़ा सा पानी (उबाला हुआ) पिलाय
जाता है यह बड़ी निहुराई की बात है
सूर्य स्त्रियां ही इस बात को अच्छा जानती
हैं । ज्वर का बुखार शरीर को गलाए देता
है, गर्मी से मुंह और जीभ सूखी जाती है
उस समय ठंडा पानी पिलाने से लाभ है
।

पानी देना-बहुधा देखा गया है कि उबर के कारण जब रोगी प्यास से छटपटाता है तो उसे थोड़ा सा पानी (उबाला हुआ) पिलाया जाता है यह बड़ी निहुराई की बात है । मूर्ख स्त्रियां ही इस बात को अच्छा जानती हैं । ज्वर का बुखार शरीर को गलाए देता है, गर्मी से मुंह और जीभ सूखी जाती है, उस समय ठंडा पानी पिलाने से लाभ के सिवाय कभी हानि नहीं हो सकती ।

हैजे में जब गला सूखा जाता हो तो ठंडा पानी देने से केवल प्यास ही नहीं बुझती बरन पेशाब भी आने लगता है । रोगी को प्यास लगी हो और डाक्टर ने पानी देना मना न कर दिया हो तो जरूर पानी देना चाहिए । उबर की अधिकता ही में रोगी धार धार पानी मांगता है । पानी देने में कुछ सुराई नहीं है । हां बहुत सा पानी पीने से उलटी हो

इस समय बर्फ की ढली चुसाना या मोड़ा-पाटर देना बहुत अच्छा है । ऐसा करने से प्यास बुझती है और ठण्डी रहती है ।

पानी को उबाल कर पिलाना इस लिये अच्छा समझा जाता है कि पानी के कीड़े मर जाते हैं । ऐसे जल को ठंडा कर के पिलाना अच्छा है परन्तु इस जल का स्वाद मारा जाता है इस लिये प्यास दूर नहीं होती । निर्दोष शीतल जल पिलाना बुरा नहीं है । रात के पिछले पहर रोगी को जल पिलाना अच्छा नहीं । उस समय मोड़ापाटर लेमनेह देना अच्छा है । यदि दमका मिलना असम्भव हो तो पानी ही सही । बहुतों से लोग खाली पेट पानी देना अच्छा नहीं समझते इसलिये मिर्ची की एक ढली तिला कर जब पानी पिलावे परन्तु मिर्चार् से प्यास बढ़ा करती है ।

पानी देना-बहुधा देखा गया है कि ज्वर के कारण जब रोगी प्यास से छटपटाता है तो उसे चोड़ा सा पानी (उबाला हुआ) पिलाया जाता है यह बड़ी निहुराई की बात है । मूर्ख स्त्रियां ही इस बात को अच्छा जानती हैं । ज्वर का बुखार शरीर को गलाए देता है, गर्मी से मुंह और जीभ सूखी जाती है, उस समय ठंडा पानी पिलाने से लाभ के सिवाय कभी हानि नहीं हो सकती ।

बर्फ के फायदे—जब ज्वर का बुखार चढ़े शय्या रोग की अधिकता से रोगी बेहोशी की याते' करने लग जाय, जिस समय रोगी का सिर गर्म हो तो सिर मुड़ा कर उस पर बर्फ रखे । ठंडे पानी से भी फायदा होता है । बर्फ न मिले तो ठंडे पानी में सिरका मिला कर और कपड़ा भिगा कर सिर पर रखे । बीमारी में सिर के बाल बड़े रखना उचित नहीं है । जब रोगी का बुखार १०४ दर्जे का हो तब अवश्य बर्फ देनी चाहिए । यदि रोगी को हरारत का कोई क्लेश न जान पड़ता हो तो न दे । जब बुखार १०२ दर्जे पर आजाय तब बर्फ बन्द करदे । हैजे और ऐसे बुखार में जिसमें कभी उबर उतरता ही न हो बर्फ का देना बड़ा जरूरी है । बर्फ देने के लिये डाक्टर की राय ले लेनी चाहिए ।

एक थैली में बर्फ भरकर रोगी के सिर

रखना जाता है जिसको Icebag (आइस बैग) होते हैं। बर्फ में चोड़ा सा नमक डाल देने चैली और भी ठंडी हो जाती है। चैली में बर्फ ़ बड़े बड़े टुकड़े रखने चाहिए। “आइस ग” न हो तो कागज में बर्फ रख कर उपयोग करे परन्तु जब कागज के भीतर पानी जमा हो जाय तो उसे निकाल डाले।

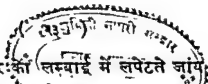
बहुत से रोगों में विशेष कर उबरों में रोगी को नहलाना अच्छा होता है। घर के दरवाजे बन्द कर के गर्म पानी में स्पर्श या तौलिया भिगो कर उससे शरीर को सँगोछ दे, और उसी समय दूसरा आदमी मूखे सँगोछे या तौलिये से शरीर को पोंछ कर मुखा दे। इस प्रकार सब शरीर को सँगोछना होता है। यह काम डाक्टर की सलाह के बिना नहीं करना चाहिए। जल में नमक मिला लेना पुरा नहीं है। यदि स्नान करना अनुचित समझा जाय तो ठंडे पानी से सिर

का अँगोछना बुरा न समझना ।
जब कुनेन सेवन से सिर भिन्नाने लगता ।
और गर्मी जान पड़ती है उस समय कि
को ठंडे पानी से धोना बहुत अच्छा होता
है । सिर का ठंडा और पैरों का गरम
रखना तन्दुरुस्ती के लिये बड़ा उपयोगी ।
सिर ठंडा रहने से नींद खूब आती है ।
सिर के नीचे घाले तकिए पर बरसाती बिजली
और रोगी का सिर सिरहाने की तरफ झुका
कर भुका दे और तब धार से पानी छोड़े ।
यह पानी एक घालटी या कठौते में गिरा
जादिए । गिर धोने के पीछे घालों को सफाई
तरह गुणादे, गिर भीगा रहना अच्छा नहीं
है । निचियों के पाधों को हाथों से निगो
कर गुलाना जादिए ।

कुली कारना-रोगी के गुंद में बहुत
साधे जग जागी है । रोग गुलाना यह जाद
तब तो गुंद भीतर में बहुत ही गरम होता

जाता है । इसलिये रोज कुल्ली करना बहुत अच्छा है । इस काम के लिये गरम जल का व्यवहार करे तो दाँतों और जीभ के ऊपर मैल न जमे तो अच्छा है । सवेरे मुँह धुला कर और कुल्ली करा कर तब दवा पिलानी चाहिए । खाना खाने के पीछे भी अच्छी तरह कुल्ली करावे । मुँह का मज्जा बिगड़ रहा हो तो दिन में कई बार कुल्ली करनी चाहिए ।

रोगी का उठाना बैठाना—बहुधा देखा जाता है कि एक ही दिन के युत्सार में रोगी ऐसा कमजोर हो जाता है कि बिस्तर से उठ नहीं सकता । रोगी को बिना सहारा दिए मलमूत्र त्याग करने के लिये जाने न देना चाहिए । क्योंकि रोग से हृदय दुर्बल हो जाता है । अनेक रोगी बिस्तर से उठते ही मर गए हैं । रोगी यहां तक दुर्बल हो जाते हैं कि उनको बिस्तर पर उठकर बैठना



1, मैली चट्टरकों (लम्बाई में लपेटते जायें और बीमार के शरीर के पास छोड़ दें। हमरी साफ चट्टर लम्बाई में आधी सी तह करके उसके लिपटे हुए हिस्से को बीमार के शरीर के पास छोड़ दें और खुली हुई चट्टर को खाली जगह में बिछा दें। तब बीमार को कापट लिया कर बिछी हुई नई चट्टर पर ले आये और मैली चट्टर दूर करके नई का लिपटा हुआ हिस्सा खोल कर बिछा दें। यदि बीमार उठ सकता हो तो उसे उठाकर पहिले साफ चट्टर को सिरहाने की ओर से तह कर उसकी जगह आधी नई बिछा दें। फिर बीमार को लिटाकर पैरों की तरफ वाली मैली आधी उठा कर साफ चट्टर का लपेटा हुआ भाग भी खोल कर बिछा दें।

दवाई या खाना पिलाने के लिये यदि रोगी को उठाना हो तो गर्दन और कंधों

में बहुत जल्द दुर्गन्ध पैदा होजाती है ।
 इस रोगी के कपड़े में प्रवेश करके
 तग बढ़ाने का कारण होता है । यह बात
 मरण या के रोगी के शरीर में लगे हुए
 कपड़े छार बिलार की बद्द को रोज बदलना
 या धूप में सुखाना चाहिए । छपवा जलती
 दुर्गन्ध के सामने मुखलाकर गरम करने का
 चाहिए । रोगी की चारपाई के ऊपर कोई
 गहर रजार्द या कम्बल न भाड़े ।

रोगमुक्त की सेवा-रोग के दूर होने
 ही पर न समझ लेना चाहिए कि छप
 बीमार की कुछ चिन्ता नहीं है । रोग फिर
 न लौट लावे इस बात का विचार रख कर
 रोगमुक्त की सेवा बड़े ध्यान से करनी
 चाहिए ।

रोग दूर होने पर बहुत से घर बंदन
 निर्दिष्टा देवता जाती हैं इस समय दूरी

स्वरोज्यता प्राप्त करने के लिये बहुत बालों में सावधान रहना पड़ता है ।

खान पान—बीमारी के पीछे रोगों की भूल बढ़ जाती है जो खोई हुई शक्ति को पुनः प्र के कारण होती है। इस समय इतना बलवान नहीं

होता कि बहुतसा खाना पचा सके। इस लिये चेष्टा करके हलका भोजन थोड़ा थोड़ा कई बार देना चाहिए। चागू दाना, दाल आदि खिचड़ी पचा लेने के पीछे दाल रोटी दे।

कपड़ा गरम और ढीला चाहिए, सर्द से बचना बड़ा जरूरी है क्योंकि असावधानी से रोग फिर लौट आ सकता है हाथ पैर ठंडा न रहना चाहिए।

निद्रा लेना परमाश्यक है। प्रति दिन नौ दस घंटे सोना और खाना खाने के पीछे कुछ देर आराम करना बहुत अच्छा समझ

तीसरा अध्याय ।

रोग के लक्षण ।

रोग के लक्षण जानने के लिये, फेफड़े और हृदय मन्त्रों
 रोग, पार्श्व, कफ, गर्म, दर्द, डाक्टर के लिये तैयार
 पेट और पेट की बीमारियाँ, मूत्र परीक्षा, दिमागी
 रोग, बुद्धि (ज्वर), घर्माघर्मा, नाड़ी
 गिनना, ज्वर का उतरना, दूत वाले
 बुद्धि में खास बन्दोबस्त ।

रोगी की सेवा करनेवालों के रोग
 सम्बन्धी लक्षणों का जानना बड़ा
 जरूरी है । उनकी सहायता से
 चिकित्सक को निदान (रोग की
 पहिचान) करने में बड़ा सुभीता
 होता है । जब रोगी इस योग्य नहीं रहता
 कि अपना दुःख सुख प्राप्त कर सके तब
 इलाज करने वाले को रोग सम्बन्धी बातें
 रोगी की टहल करने वालों से ही पूछनी
 पड़ती हैं । इस लिये चाहिए कि रोगी की
 मोटी मोटी बातें उसको मालूम हों । हाथ

निफलता है यह केफड़ों से ज्ञाता है और जो उलटी के साथ ज्ञाता है वह पेट से ज्ञाता है । रोगी को उठने बैठने देना न चाहिए । डाक्टर को मत्काल खबर देनी चाहिए ।

दमा खांसी आदि रोगों में सर्दी बड़ा विचार चाहिए । रोगी को फलालेन का वामफट या कुरता पहिराना चाहिए । कम से कम तीन दिन पीछे फलालेन के कपड़े को ज़रूर बदल देना चाहिए । हो सके तो प्रति दिन बदलना चाहिए । उड़ना भारी न हो परन्तु सर्दी रोफने के लिये काफी गरम हो ।

दमे के रोगियों की दया सर्वदा पास रहनी चाहिए ।

दमे या खांसी वाले रोगी के लिये यदि डाक्टर बुलाया गया है तो उसके बैठने को फुरसी ला रखनी चाहिए । उड़ने के भीतर रोगी के शरीर का कुर्ता आदि

जाड़े के दिनों में यह बड़ा ज़रूरी है कि ऐसे रोगियों का घर गरम रहे और ठंडी हवा लग कर रोगी की दशा बिगाड़ दे।

पेट शरीर का यह अंग है, जिसमें भोजन पचने का यंत्र है। जो भोजन हम खाते हैं उसे दांतों से चबा कर उसमें घूक मिलाते हुए आमाशय में ले जाते हैं। आमाशय से यह आंतों तक जाता है जहां से नसों इसमें से सार भाग खींच ले जाती हैं और पीछे केवल मल रह जाता है जो मलद्वार के राह से बाहिर निकल जाता है। जब तक पाचन क्रिया नियम पूर्वक हुआ करती है किमी को यह नहीं मालूम होता कि पेट में क्या हो रहा है। परन्तु जब कुछ बिगाड़ खाता हो जाता है तभी पेट में दर्द, और ऐंठ होता है। दस्त, संग्रहणी, शूल इत्यादि रोग पाचन

हो या दिल और जिगर रोगी हों तो उल्टी में खून आसकता है। उल्टी के साथ पेट में ऐसा दर्द होता है कि दबाव पहुंचाना सच्चा जान पड़ता है और कभी दर्द ऐसा होता है कि पेट पर कपड़ा भी दुखदाई जान पड़ता है। कुपच्य खाने से पेट में शूल उठता अर्थात् आंतें ऐंठने लगती हैं।

पेट में जब हवा इकट्ठी हो जाती है तो पेट ढोल सा हो जाता है। उसके निकलने के दो उपाय हैं- एक तो मल द्वारा दूसरा मुख द्वारा (डकार)। जब वायु किसी मल से न निकले तो पेट तन कर पत्थर सा जाता है और दिल की चाल रुकने से रोगी मर जाता है।

पेट की बीमारियों में मल की दृष्टि से रोग के निदान में बड़ी सहाय मिलती है। परिचारक मल के रंग, मात्रा का ध्यान रखे। उसमें रुधिर

का दूषित मल मिला रहता है । पदार्थों को दूर कर उनकी सख्ती नमी सफाई तथा उनका पुनरुत्पादन चमड़े से ही जान पड़ता है । शरीर की गर्मी को स्वाभाविक दर्जे पर रखना भी खाल का काम है ।

चमड़े के ऊपर बहुत फोड़े फुंसी होते हैं । फुंसियों के गुराह दूर करने के लिये पहिले उनको तेल से भिगो देना चाहिए, ऊपर से तेल में भिगो कर घायो पर लगाने वाला लिण्ट (Lint) नामक कपड़ा रख दे । दो तीन घंटे पीछे पुलटिस बांध दे । उससे सब गुराह दूर हो कर साफ पात्र निकल जाता है । जिन बीमारों का दाद और गुजली हो उनके कपड़े काई और समुष्ण व्यवहार न करने पावे । गुजली में एक प्रकार का कीड़ा होता है जो दादों के भीतर रहता है । लंथक का जरूरत इनको धार डालना है । गुजली दादों बीमार का

तु हागने से भी आदमी पेहोय हो जाता है ।

रुधिर विकार से होने वाले रोगों में गँठिया रोग है । गँठिया के बीमारों को सर्दों से बचना चाहिए । जोड़ों पर रक्त करना होता है । ऊपर से रुई या नमदा बांधना होता है । गँठिया में रोगी को बड़ी सावधानी से खाना दिया जाता है । माँस देना बड़ा हानिकारक है । दर्द जोर प हो तो केवल दूध ही पर रोगी को रखना होता है ।

ऊवर या बुखार कई कारणों से होता है । ऊवर का बड़ा लक्षण यह है कि शरीर गर्म हो जाता है साधारणतः शरीर की गरमी ८८.४ दर्जे पर होती है और बुखार में बढ़ कर १०८ तक हो जाती है । इससे अधिक हरारत बढ़ने पर आदमी जी नहीं सकता । सवेरे की अपेक्षा शाम को

थर्मामिटर हरारत नापने का यन्त्र है इसमें ८० से लेकर ११० तक मोटी मोटी लकीरें होती हैं। अच्छा थर्मामिटर वह है जो शरीर से बाहर निकालने पर उसका पारा आपही आप नीचे नहीं उतरता। बगल में लगाने से पहिले पारे को ८५ डिग्री पर उतार लेना चाहिए। बगल को पोंछकर तब पारेवाला सिरा वहां रखे और बाजू के मोड़ कर शरीर के साथ लगा दे। जितना देर का थर्मामिटर हो उतनी देर लगाकर बगल से बाहर निकाल ले। यदि पढ़ना आता तो पारे का दर्जा लिख ले और जो न आता हो तो ड्यो का त्यों सावधानी से रख और डाक्टर को दिखा दे। थर्मामिटर पढ़ना सीखना कुछ भी कठिन नहीं है।

नाड़ी की संख्या गिनने के लिये पंजे से आध इंच ऊपर की तरफ अंगूठे की मध्य मीथमें आपनी जंगली रखे। जब ना

की तड़प मालूम हो तो सेकेंड की सुई से उसकी चाल गिने । जब तक बीमार निरबल और शान्त न हो तब तक उसकी नाड़ी न गिने ।

जब रोगी का सांस गिनना हो तो नाड़ी हाथ में लेकर छाती के उठने बैठने पर नज़र करे और गिने । यज्ञों के पेट पर हाथ रख कर सांस गिनना चाहिए । जवानी में मनुष्य प्रायः एक मिनट में १७ बार सांस लेता है ।

उपर उतारने के लिये तीन उपाय किए जाते हैं । (१) ठण्ठक पहुंचाना (२) पसीना लाना (३) रुधिर पर असर करने वाली दवाई देना ।

सर्वसाधारण लोग उपर में ठण्ठक पहुंचाना अच्छा नहीं समझते परन्तु इसमें कुछ संदेह नहीं है कि जब उपर बहुत ही अधिक हो जाता है तो ठण्ठे जल या दूध के स्पर्श से बहुत फ़ायदा पहुंचता है । बिलनें ही के

प्राण बच जाते हैं । रोगी को किसी चद्दर या कम्मल में लपेट कर साधारण जल में लिटा दे और फिर उस जल को धीरे धीरे ठंडा करता जाय । डाक्टर की आज्ञानुसार रोगी को १० मिनट या अधिक पानी में रखना चाहिए । डाक्टर इस समय मौजूद रहे । रोगी और पानी दोनों की हरारत को बार बार जांचना चाहिए ।

बरफ़ के पानी से भिगी हुई चद्दर भी व्यवहार में लाई जाती है । बिस्तर पर बसाती बिछाकर रोगी को लंगोठ लगा नंगा लिटा दे और ऊपर से ठंडी चद्दर उड़ा दे । जब चद्दर गरम हो जाय बदलकर दूसरी चद्दर बरफ़ के पानी से भीगी हुई रखे । ऐसा करने से ज्वर की हरारत बहुत जल्द घट जाती है । ठंडे या गर्म पानी से स्पंज भी करते हैं ।

पसीना लाने के लिये ठंडे पानी की

माण : **हरे डोजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-**
 या फल **हरे डोजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-**
 लिटा दे **हरे डोजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-**
 ठंडा करत **हरे डोजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-**
 रोगी को **हरे डोजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-**
 रखना चाहि **हरे डोजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-**
 रहे । रोगी **हरे डोजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-**
 को बार बार **हरे डोजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-**

फर्द चीजें ऐसी हैं जो रोग फैलाने-
वाले कीड़ों को तुरंत मार देती हैं। इन दवाइयों
को अंग्रेजी में ऐंटीसेप्टिक्स या डिसिन्फेक्टे-
न्स (Antiseptics or Disinfectants) कहते हैं।
कार्बोलिक ऐसिड, करोजिव सॉलीनेट (स-
कपूर), चूना, कांडीज एफूइड-प्रसिद्ध दवाइयां
हैं । फ़िनाइल (Phenyle) घ्राजकल सब बड़े
शहरों में मिलता है जिसके एक हिस्से को
१६ गुने पानी में मिला कर गमलों में रखते
हैं और घरों और मोरियों में उसे छिड़कते
हैं । सस कपूर के एक हिस्से में पानी ५००
गुना मिला कर काम में लाते हैं ।

कांडीज एफूइड पानी को शुद्ध करने के
लिये बरता जाता है ।

जब डाक्टर से यह माहूम हो जाय
कि छूतदार उबर है तो नीचे लिखे नियम
पालन करने आवश्यक होते हैं ।

१-रोगी के कमरे का फ़ालतू असबाब

एक किनारे रखवा रहे । रोगी के अच्छे होने पर कमरे की सफाई के साथ उनकी भी सफाई हो और दवा छिड़की जाय ।

२ घर में जब तब कार्बोलिक लोशन (Carbolic lotion) छिड़कना चाहिए ।

३ चारपाई ऐसे ढंग से बिछाई जाय कि परिचारक दोनों ओर से रोगी के पास जा सके ।

४ दरवाजे पर एक चद्दर कार्बोलिक लोशन में भिगो कर लटकानी चाहिए और उस चद्दर को कई बार लोशन में भिगाना चाहिए ।

५ दिन में दो बार (कम से कम) कांटीज पलूट (Candy - fluid) से कुत्सी करानी चाहिए ।

६ बीमार के पास से बाहर जाना हो तो दवाई मिले पानी से हाथ धोना चाहिए और उपर पहना हुआ कपड़ा बर्ती ढोड़ना चाहिए ।

100

100

७ रोगी का घर सब से अलग होना चाहिए ।

८ जो कपड़े रोगी के काम में आते हैं और मल से दूषित हो चुके हैं वे आरोग्य होने पर जला देने चाहियें ।

९ घर को गंधक जला कर शुद्ध करें, रोगी का बिस्तर और सोढ़ना विशेष अन्दर ही रहने दें ।

आधपाव गंधक कूट कर दहकते हुए कोयलों के ऊपर डाल कर दरवाजे सब बन्द कर देने चाहियें ।

घर में खूब आग जला देना भी बहुत अच्छा है ।

इन सफ़ाईयों के बाद सफेदी करा दी जाय ।



(५२)

जायगा तो संभव है कि अधिक मात्रा दे दी जाय, या जहरीली दवाई उचित मात्रा से अधिक पिला दी जाय या जो जहरीली दवाई बाहर लगाने के लिये है वह पिला दी जाय ।

घोटल को हिला कर तब पिलाने के गिलास में मात्रा डालनी चाहिए । घोटल पर जो कागज़ हिदायत का लिखा हुआ है उसे दवाई निकालने के समय ऊपर की ओर रखे जिससे कि उस में दाग न पड़े । घोटल का काग़ बेमतलब खुला न रहे । ऐसा होने से बहुत सी दवाइयों का गुण जाता रहता है । बहुधा रोगी दवाई पीने में अपनी अनिच्छा दिखलाते हैं । परिचारक का धर्म है कि उन्हें दृढ़ता और नम्रता से समझा कर दवाई पिला दे । ज़रूरदस्ती करने की आदत बहुत बुरी है ।

पनीली (पानी की तरह घुली हुई)

जायगा तो संभव है कि अधिक मात्रा दी जाय, या ज़हरीली दवाई उचित मात्रा से अधिक पिला दी जाय या जो ज़हरीली दवाई बाहर लगाने के लिये है वह पिला दी जाय ।

बोतल को हिला कर तब पिलाने के गिलास में मात्रा ढालनी चाहिए । बोतल प जो कागज़ हिदायत का लिखा हुआ है उसे दवाई निकालने के समय ऊपर की ओर रखें जिससे कि उस में दाग न पड़े । बोतल का काग़ बेमतलब खुला न रहे । ऐसा होने से बहुत सी दवाइयों का गुण जाता रहता है । बहुधा रोगी दवाई पीने में अनिच्छा दिखलाते हैं । परिचारक का धर्म कि उन्हें दृढ़ता और नम्रता से समझा कर दवाई पिला दे । ज़बरदस्ती करने की शक्त बहुत घुली है ।

पनीली (पानी की तरह घुली हुई

क्योंकि उनकी खाल बहुत नर्म होती है। एक पतली तह कपड़े की बिछा कर तब पुलिटिस लगाई जाय तो अच्छा है।

बाएं हाथ पर फैली हुई पुलिटिस लेकर पहिले नीचे का सिरा जमावे और तब सब लगा दे।

अलसी (तीसी) की पुलिटिस—गरम बर्तन में खोलता हुआ पानी डाले और तब पिसी हुई अलसी थोड़ी थोड़ी डालता और मिलाता जाय। जब गाढ़ी और लगाने लायक हो जाय तब उसमें अलसी या रेंडी का तेल मिला कर खूब चलादे और रुई, फलालेन या पुराने कम्मल के टुकड़े पर फैला कर काम में लावे।

रुई की पुलिटिस—अलसी और रुई दोनों को गरम पानी में मिलाते हैं और फैला कर मलमल से ढक देते हैं और फिर लगाते हैं। अन्य पुलिटिसों को ही लगा दी

पर जल्दी जल्दी फेरे । जब शरीर में घोंत-
लता आजाय तब बिस्तर पर लेटा दे और
कपड़े उढ़ा दे ।

भफारा लेना—खींचते हुए पानी में
दवाई डाल कर भाफ़ सांस के साथ भीता
खींची जाती है । इसका सीधा उपाय यह
है कि एक लोटे में खींचता हुआ पानी भां
और तेल लिये को गोल करके लोटे के किनारे
पर रखे और तब बीमार अपना मुँह रा
कर भाफ़ को सांस के साथ खींचे ।

ठीक नहीं है । हां रोगावस्था में वही खाना उपयोगी नहीं होता जो आरोग्यता में होता है । दूध एक ऐसी चीज है जो सब प्रकार की बीमारियों में खाई जा सकती है । पेट की बीमारियों में तो दूध के सिवाय और कोई पदार्थ लाभदायक नहीं होता । गरम गरम दूध पीने की अपेक्षा ठंडा दूध पीना अच्छा मालूम होता है । पेट में तुरन्ती हो तो दूध में (Lame water) लाइम वाटर अर्थात् चूने का साफ़ फिटिक पानी मिला कर पिलाना चाहिए । उलटी हो जाती हो तो थोड़ा थोड़ा दूध थोड़ी थोड़ी देर में दे । दूध को बर्फ़ में ठंडा करके देने से भी रुक जाती है । ज्वर में ठंडा पानी या बर्फ़ का पीना रोगी को बहुत अच्छा जान पड़ता है परन्तु बहुत पानी एक साथ नहीं पीना चाहिए ।

पर छान कर व्यवहार में लाये ।

चावल उबालना—आध पाव चावल ढाई पाव खोलते हुए पानी में चढ़ाये और दस मिनट तक पकने दे, जब चावल गल जाय और खिल जाय तब छान ले और उतार कर कौयलों पर रखदे ।

दलिया—ओटमील अर्थात् जौ की दलिया एक छटांक देगुची में रख कर थोड़े से पानी में चोल दे और फिर ढाई पाव पानी या दूध मिला कर उबाल ले । आध घंटे तक धीमी आंच में पकने दे और चलाता रहे । शकर अथवा नमक से स्वादिष्ट करले ।

चावल का मांड़, पीच अथवा कांजी—डेढ़ छटांक चावल खूब धोकर सवा सेर पानी में उबाले और एक घंटे तक खदकने दे फिर छान कर स्वादिष्ट करले ।

—अथवा—एक कप चने भर ताँदोत चोड़

पूय उपाले । फिर उनको मल का दान है ।

यदागु—पायलों को छ गुने पानी में मिला कर बिना मांड़ निकाले पतला भात बना कर खिलाये ।

वेय—पांयलों को चौदह गुने पानी में पीने के माफ़िक पकाना ।

दाल का पानी—मूंग की दाल अथवा और जो दाल घताई हो उससे छठारा गुना पानी डाल कर पकाये और नमक डाले । फेन निघार दे और इस दाल के पानी को रोगी पीये ।

छाछ की कढ़ी—गाय की ताजी छाछ पानी मठा लेकर उसमें चने या मूंग का घेसुन डाले । नमक और काली मिर्च का चूर्ण डाले । एक देगची में घी या तेल डाल कर उसमें जीरे या हींग का बघार दे और तब छाछ घेसुन मिली हुई छेड़ें । चलाता रहे जिससे गुठला न बने । पूय पका कर खिलाये ।

आग के पास रखे और छान ले । नीबू के छिलके डाल कर सुगन्धित करले । मूत्र संबन्धी पीड़ा में यह बड़ी उपकारी है ।

भूषी की रोटी—यह बहुमूत्र रोग में खिलाई जाती है । यथा प्रयोजन भूषी लेकर थोड़े से पानी में भिगा कर रख दे । जब सूब नरम हो जाय तब गूंध ले और घेल कर छोटी छोटी और मोटी रोटी बना कर सेंकले ।

रोगियों के लिये बहुत से पथ्य विलापत से बने हुए आते हैं । हम यहां पर उनमें से चंद के पकाने की तरकीब लिखते हैं ।
बेंजरस फूड (Benger's Food) डेढ़ तोला लेकर एक छटांक कच्चे दूध में मिलावे और चलाता रहे तथा क्रमशः डेढ़ पाय पानी मिला हुआ उबला दूध मिलावे और कुछ देर गरम जगह में रखे तब आग पर बढ़ाकर उमे चलाता रहे । लदकने पर उतार ले, बिल्कुल ठंढा हो जाने पर रोगी को खिलावे ।

मि एक फूड नं० २ एक झोंस ठंडे पानी में भिलाकर पहिले कही हुई रीति से पांच झोंस गरम जल में मिलाले ।

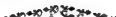
चार महीने के बच्चे के लिये तीन घंटे पीछे चार पांच झोंस तक दे, पांच छः महीने के बच्चे को चौध घंटे छः झोंस दे ।

तन्दुरुस्त बच्चे को रात के ११ बजे से पीछे सुबरे के ५ बजे तक कुछ भी खाने को न देना चाहिए ।

नं० ३ मास्टर्ड फूड—आधी छटांक मास्टर्ड फूड और चाय के चम्मच भर चीनी ३५ छटांक ठंडे पानी में अच्छी तरह मिलावे, ५५ छटांक खरीखा होजाय तब उसमें एक सेर दूध जिसमें बराबर का पानी मिलावे, मिलाते समय

ले, फिर कपड़े में बँधी हुई दाल को मले जिससे उसका सब रस पानी में मिल जाय । इस पानी को छान कर रोगी को पिलाये । इसमें दो एक बूंद नीबू का रस भी डाल सकते हैं ।

सागूदाने की खिचड़ी—आधी छटांक मूँग की दाल यथोचित पानी में चढ़ा दे । जब दाल गल जाय तो उतना ही सागूदाना ठंडे पानी में धोकर उसमें डाल दे फिर नमक छोड़दे । जब सागूदाना दाल में मिल जाय तब उतार ले ।



जब किसी प्रकार ये कीड़े घाव में पहुँच जाते हैं तो उसमें पीम पड़ जाती है और यह गलने लग जाता है । आज कल चीर फाड़ में इस बात का बड़ा ध्यान रखा जाता है कि घाव में किसी प्रकार से जीव न घुसने पावे । परीक्षा से यह बात ठीक मालूम होगई है कि शरीर के किसी हिस्से में चीर फाड़ की जाय परन्तु सफाई ऐसी रहे कि घाव सड़ाने वाले कीड़े घाव में न पहुँचे तो वह घाव बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा और उसका निशान बहुत कम रहेगा ।

घाव को सड़ाने वाले कीड़े चीर फाड़ करने वाले तथा उसके सहायकों के हाथों में से लग सकते हैं । रोगी के चमड़े पर से भी आ सकते हैं । चीर फाड़ के औजारों और मरहम पट्टी में से भी इनका आना संभव है, हवा में से गर्द गुबार पड़ कर भी घाव बिगड़ सकता है, परन्तु गर्द

घाव बिगाड़ने वाले कीड़े नहीं रहते । घाव के पास मुँह करके बात करना और सांस लेना बहुत खराब है क्योंकि घालने से सूक और सांस लेने से नाक का मद हवा को दूषित करके घाव को बिगाड़ सकता है ।

रोग स्थान शुद्ध करना—जिस जगह चीरा देना है उसकी सफाई भी बड़ी ज़रूरी है । खूब गरम पानी और साबुन से पहिले उस जगह को धोये । फिर तारपीन के तेल में कपड़ा भिगो कर उस जगह को रगड़ें जिससे कि चमड़े की चिकनाई हट जाय । तिसके पीछे स्पिरिट में गाज़ भिगो कर रगड़ें और पांच फी सदी तेजाय मिले कार्बो-लिक लोशन से धो डाले । टाई फी सदी वाले लोशन में गाज़ भिगो कर निचोड़ कर इस स्थान पर रस ऊपर से मोमजामा बिछा पट्टी बांध दें । जिस समय चीरा लगाने का समय नियत हो उस समय पट्टी हटा कर

ड्रेसिंग (Dressing मलहम पट्टी) की सफाई—जो कपड़ा रुई या पाट्टी घाव के ऊपर रखी जाती है ड्रेसिंग कहलाती है । माटापिलाम के समान छिरछिरा बिना हुआ कपड़ा गाजु कहा जाता है और घाव के भीतर और ऊपर रखने के लिये इसलिये बहुत अच्छा होता है कि यह मवाद को घाव में से चूसता रहता है । ड्रेसिंग को भी शुद्ध करते हैं । सबसे उत्तम रीति यह है कि उनको भाप देकर शुद्ध किया जाय । जिस वरतन में औज़ार उबाले जाते हैं उसमें ही एक चलनी ड्रेसिंग रखने के लिये बना दी जाती है और सब ड्रेसिंग भाप से शुद्ध हो जाती है ।

सेप्टीसेप्टिक लोशन-घाव के सड़ाने वाले कीड़ों के मारने वाली दवाइयों को पानी में मिला कर लोशन तय्यार करते हैं । सबसे अधिक कार्यालिक लोशन काम में आता है ।



(८२)

आवश्यक चीजें ।

प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में ये चीजें
अवश्य रखनी चाहिए ।

थर्मामीटर Thermometre.

रेंडी का तेल Castor oil.

तारपीन का तेल Turpentine oil.

वेसलीन Vaseline.

कार्बोलिक सोंप Carbolic Soap.

पिसी हुई राई Mustard Powder.

शीशे का छोटा आबखोरा Drinking cup.

दवाई मापने का ग्लास Measuring glass.

ऊई Cotton.

लिट Lint.

गटा पर्चा Guttapercha.

पट्टी Bandage.

मोमजामा Water-proof sheet.

